

ऐसे परम तपोनिधि जहाँ-जहाँ, जाते हैं...जाते हैं ।
 परम शांति सुख लाभ जीव सब, पाते हैं...पाते हैं ॥
 भव-भव में सौभाग्य मिले, गुरुपद पूजूँ ध्याऊँ ।
 वरूँ शिवनारी... नारी, वरूँ शिवनारी ॥४॥

(१२)

हे परम दिगम्बर यति, महागुण व्रती, करो निस्तारा ।
 नहिं तुम बिन हितू हमारा ॥
 तुम बीस आठ गुणधारी हो, जग जीव मात्र हितकारी हो ।
 बाईस परीषह जीत धरम रखवारा, नहिं तुम बिन हितू हमारा ॥१॥
 तुम आतम ज्ञानी ध्यानी हो, प्रभु वीतराग वनवासी हो ।
 है रत्नत्रय गुण मण्डित हृदय तुम्हारा, नहिं तुम बिन हितू हमारा ॥२॥
 तुम क्षमा शांति समता सागर, हो विश्व पूज्य नर रत्नाकर ।
 है हित-मित सद् उपदेश तुम्हारा प्यारा, नहिं तुम बिन हितू हमारा ॥३॥
 तुम धर्म मूर्ति हो समदर्शी, हो भव्य जीव मन आकर्षी ।
 है निर्विकार निर्दोष स्वरूप तुम्हारा, नहिं तुम बिन हितू हमारा ॥४॥
 है यही अवस्था एक सार, जो पहुँचाती है मोक्ष द्वार ।
 'सौभाग्य' आप-सा बाना होय हमारा, नहिं तुम बिन हितू हमारा ॥५॥

(१३)

है परम-दिगम्बर मुद्रा जिनकी, वन-वन करें बसेरा ।
 मैं उन चरणों का चेरा, हो वन्दन उनको मेरा ॥
 शाश्वत सुखमय चैतन्य-सदन में, रहता जिनका डेरा ।
 मैं उन चरणों का चेरा, हो वन्दन उनको मेरा ॥टेक॥
 जहाँ क्षमा-मार्दव-आर्जव-सत् शुचिता की सौरभ महके ।
 संयम-तप-त्याग-अकिंचन स्वर परिणति में प्रतिपल चहके ।
 है ब्रह्मचर्य की गरिमा से, आराध्य बने जो मेरा ॥१॥